नवदुनिया, भोपाल
1 MAY 2017.

प्रसंगवश : आदि शंकराचार्य जयंती

आदि शंकराचार्य ने मध्य प्रदेश से दिया सांस्कृतिक एकता का संदेश

शिवराज सिंह चौहान

उदया तिथि के अनुसार 1 मई 2017 को आदि शंकराचार्य की 'प्राकट्य पंचमी' को हम पूरे प्रदेश में 'आचार्य शंकर प्रकटोत्सव' के रूप में मना रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भी आदि शंकराचार्य के प्रकटोत्सव को 'राष्ट्रीय दर्शन दिवस' घोषित किया है। अद्वैत वेदांत दर्शन के प्रवर्तक, सनातन धर्म के पुनरुद्धारक एवं सांस्कृतिक एकता के देवदूत आदि शंकराचार्य का पावन स्मरण हम सांस्कृतिक एकता स्वरूप कर रहे हैं। इस अवसर पर पूरे प्रदेश में सभी संभाग, जिला, विकासखंड और ग्राम पंचायत स्तर पर विभिन्न विभागों के समन्वय से संगोष्ठियां और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं।

आज से लगभग 1200 वर्ष पूर्व यानि 792 ईस्वी में आदि शंकराचार्य मध्य प्रदेश में नर्मदा तट पर ज्ञान प्राप्ति के लिए आए थे। उन्होंने ओंकारेश्वर के पास गोविन्द पादाचार्य से ज्ञान प्राप्त किया। इस घटना से बहुत कम लोग परिचित हैं। हम इसको एक चमत्कार के रूप में देखते हैं। मप्र को इस पर गर्व है कि आदि शंकराचार्य 1200 वर्ष पहले एक चमत्कार के रूप में मध्यप्रदेश की धरती पर प्रकट हुए। उन्होंने ही 'नर्मदाष्टक' लिखकर मां नर्मदा के महत्व को स्थापित किया। एक बार जब मां नर्मदा की भीषण बाढ़ से लोग आतंकित हो गए तो उन्होंने नर्मदाष्टक लिखकर मां नर्मदा से प्रार्थना की और वह शांत हो गई।

मध्यप्रदेश से ही उन्होंने 'अद्वैत सिद्धांत' का प्रतिपादन किया और यहीं से शिक्षित होकर अपने सिद्धांतों के प्रतिपादन के लिए सम्पूर्ण भारत वर्ष का भ्रमण किया था। उन्होंने देश के भ्रमित समाज को दिशा प्रदान की। उनके कारण ही वेदों एवं उपनिषदों की वाणी पूरे भारत में पुनः गूंजी। उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक उनकी सांस्कृतिक एकता यात्रा का मध्य-बिन्दु स्वाभाविक रूप से मध्यप्रदेश रहा है। संभवतः यह उन्हीं के संस्कारों का परिणाम है कि आज भी मप्र में अतिवादी आग्रह नहीं है, न धर्म का, न जाति और न ही संप्रदाय का। आदि शंकराचार्य मात्र 32 वर्ष की आयु में ऐसा कार्य कर गए, जिनके लिए हमारी कई पीढ़ियां आभारी रहेंगी।

त्रेता युग में भगवान राम ने उत्तर-दक्षिण, द्वापर युग में भगवान कृष्ण ने पूर्व-पश्चिम को जोड़ा था। कलयुग में यह जिम्मेदारी आचार्य शंकर पर आ गई। उन्होंने भारत में चारों दिशाओं में चार मठ स्थापित कर राष्ट्र को एकसूत्र में बांधने का कार्य किया। आज हम दक्षिण स्थित रामेश्वरम् से जल लेकर उत्तर स्थित बद्रीनाथ में चढ़ाते हैं, फिर बद्रीनाथ में पूजा कर दक्षिण में ब्राह्मण पूजा करते हैं। इसके पीछे यही सोच है कि भारत एक सूत्र में बंधे।

आज दुनिया में शांति भंग हो रही है। लोग भाषा, जाति, धर्म, रंग, देश आदि कई आधारों पर बंट रहे हैं। ऐसे में सारी दुनिया को जोड़ने का काम 'वेद दर्शन' कर सकता है। सभी का देवता एक है, वही सबके मन में निवास करता है। सृष्टि के कण-कण में भगवान बसते हैं। हर आत्मा में परमात्मा का अंश है। दूसरे का अस्तित्व कहां है? यही सांस्कृतिक पृष्ठभूमि है, जिसके कारण भारतवासी हजारों साल से यह मानते आए हैं कि 'अयं निजः परो वेत्ति गणनां लघु चेतसां, उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।' पूरे विश्व का कल्याण हमारा दर्शन है। आचार्य शंकराचार्य के दर्शन ने भारतीय समाज में इन्हीं जड़ों को मजबूत किया।

हमने निर्णय लिया है कि मध्यप्रदेश में आदि शंकराचार्य के पाठ शिक्षा पुस्तकों में जोड़े जाएंगे, उनका प्रकटोत्सव मनाया जाएगा। ओंकारेश्वर में शंकर संग्रहालय, वेदांत प्रतिष्ठान और शंकराचार्य की बहुधातु मूर्ति स्थापित की जाएगी। मूर्ति के लिए प्रदेशभर से धातु संग्रह अभियान चलाकर प्रदेशवासियों को इससे जोड़ा जाएगा। आइये, हम सब संकल्प लें कि आदि शंकराचार्य के प्रति मध्यप्रदेश की ओर से अपनी कृतज्ञता की अभिव्यक्ति करेंगे।

(लेखक मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री हैं)